Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

हिंदी चित्रपट संगीत में महिला गायिकाओं का अवदान (1950 से 1970 तक के सन्दर्भ में)

PARUL SHARMA[1] & DR. ASHOK KUMAR SHARMA[2]

[1]Research Scholar (Ph.D), Department of Music & Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra
[2]Assistant Professor, Department of Music & Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra

शोध सार

संगीत के रूप में प्रकृति ने मनुष्य को अनुपम उपहार दिया है। प्रकृतिदत्त यह भेंट मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। सुख की स्थिति हो अथवा दुख की घड़ी, प्रत्येक स्थिति में मनुष्य संगीत का साथ चाहता हैं। सर्वविदित है 'गीतं वाद्यं च नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते' अर्थात गायन, वादन एवं नृत्य के सम्मिलित स्वरूप को संगीत कहा गया हैं। प्राचीन काल से ही इन तीनों प्रकारों के रूप में संगीत प्रत्येक घड़ी मनुष्य के जीवन में विद्यमान रहा हैं। संगीत एक सार्वदेशिक कला है जिसमें मनुष्य स्वर, लय और ताल के माध्यम से अपने मन के भावों को अभिव्यक्त करता हैं दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि संगीत मानव मस्तिष्क के लिए एक दवा का काम करती हैं एक ऐसी दवा, जब मानव उसे प्राप्त करता हैं तो उसे अत्यधिक प्रसन्नता एवं आंतरिक शांति की अनुभूति होती हैं। संगीत के किसी भी क्षेत्र में प्रवेश कीजिए चाहे वह लोकसंगीत हो, सुगम संगीत हो, चित्रपट संगीत हो अथवा शास्त्रीय संगीत, निश्चित रूप से आनंद ही प्राप्त होगा। लेकिन चित्रपट संगीत, जो सवाक् चित्रपट युग की देन है, इन सब शैलियों से कहीं ज्यादा लोकप्रिय हैं क्योंकि यह कला साहित्य, संगीत, चित्र, शिल्प एवं नाट्य इन सभी ललित कलाओं के विभिन्न तत्वों को दृश्य एवं श्रव्य कला के रूप में अंतर्निहित किए हुए विकसित हुआ हैं। आज सुर की दुनियां में इसने अपने को बिल्कुल ही मुक्त कर लिया है, यही कारण है कि यह जनता के एकदम निकट है। आधुनिक युग में लोक संगीत का सहारा लेकर संगीतज्ञों ने संगीत को सरल बनाया लेकिन जब चित्रपटों का प्रचलन हुआ तो संगीतज्ञों को अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये उपयुक्त साधन और अवसर मिल गया। तत्पश्चात् चित्रपटों में ऐसे ही संगीत का उपयोग किया जाने लगा, जो सीधे-सीधे जन सामान्य के दिलो-दिमाग को स्पर्श कर सके। चित्रपट संगीत एक ऐसी कला हैं जिसमें नाट्य और संगीत दोनों ही सम्माहित है चित्रपटों में संगीत दो रूप में प्रयोग में लाया जाता रहा हैं। एक 'गीत-संगीत' और दूसरा 'पाश्र्व संगीत'। गीतों की धुनें तैयार कर उनके साथ जो संगीत दिया जाता हैं वही गीत-संगीत कहलाता हैं तथा पाश्र्व संगीत का अर्थ है - पर्दे के पीछे का संगीत। जो चित्रपटो में दिखाए जाने वाले दृश्यों की स्थिति के अनुरूप दिया जाता है। पाश्र्व संगीत की कल्पना वाद्यों के बिना कर पाना नामुमकिन है क्योंकि संगीत में जितना महत्व गायन अथवा गीत रचना का होता है उतना ही पाश्र्व संगीत का भी रहता है। आज भी जब हम पुरानी फ़िल्मों के गीत सुनते हैं तो हमें आनंद की प्राप्ति होती है। चित्रपट जगत में 1950 से 1970 का समय में बहुत मधुर गीतों की रचना हुई। जिसमें पुरूष गायकों के साथ-साथ महिला गायिकाओं ने भी प्रवेश किया जिनमें सुरैया ज़माल शेख, शमशाद बेगम, गीतादत्त, लता मंगेशकर, आशा भोसले, सुधा मल्होत्रा, मुबारक बेगम, सुमन कल्याणपुर, उषा मंगेशकर, कमल बारोट, सुलक्षणा पंडित, हेमलता, उषा उत्थुप, वाणी जयराम, सुषमा श्रेष्ठ तथा दिलराज कौर आदि प्रमुख हैं।

उद्देश्य:-हिंदी चित्रपट संगीत में प्रसिद्ध महिला कलाकारों के योगदान को जानना।

अनुसंधान विधि: - प्रस्तुत शोध-पत्र में सर्वेक्षणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्दः- चित्रपट, संगीत, पाश्र्व गायन, महिला कलाकार

भूमिका

भारत में जिस समय मूक चित्रपटों का प्रचलन हुआ उस समय समाज में नाटकों का प्रचलन था। पौराणिक, ऐतिहासिक आदि कथाओं का मंचन गीत-संगीत का सहारा लेकर किया जाता था। जब मूक चित्रपटों का प्रचलन हुआ उस समय के प्रसिद्ध नाटकों से ही विषय लेकर चित्रपटों का निर्माण होने लगा और उस समय के प्रसिद्ध नाटकों में प्रयुक्त गीत-संगीत की सफलता ने चित्रपट निर्माताओं को इस ओर आकर्षित किया। इसीलिए प्रारम्भिक बोलते चित्रपटों पर उस समय के नाटकों और उनमें प्रयुक्त होने वाले गीत-संगीत का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। धीरे-धीरे गीत-संगीत भारतीय हिंदी चित्रपटों की आवश्यकता बन गया। जिसमें संगीत निर्देशकों, गायक-गायिकाओं एवं गीतकारों ने अपने हुनर से चित्रपट संगीत को इतना प्रभावशाली बना दिया कि जनता केवल गीत-संगीत सुनने के लिए ही चित्रपट देखना पसंद करने लगी और आज चित्रपट संगीत भारतीय संगीत का एक महत्वपूर्ण

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

हिस्सा बन चुका है। जिसकी शुरुआत 14 मार्च, 1931 को प्रथम सवाक् चित्रपट आलमआरा के आगमन से हुई जब चित्रपट पर चलती-फिरती बेज़ुबान तस्वीरों को आवाज़ मिल गई। इन दिनों प्रत्यक्ष गायन का प्रचलन था। जिसके कारण काफी कठिनाइयां सम्मुख आने लगी। चित्रपट निर्माता-निर्देशकों की दृष्टि अब उन अभिनेता और अभिनेत्रीयों पर पड़ने लगी जो आकर्षक व्यक्तित्व के साथ-साथ अभिनय प्रवीण तो थे परंतु उनकी आवाज़ में सुरीलेपन की मिठास नहीं थी। जब ऐसे कलाकारों की ओर ध्यान गया तो कोशिश की जाने लगी कि यदि किसी प्रकार पाश्र्व गायन का प्रारंभ कर दिया जाये तो ऐसे कलाकार जो अच्छा गा तो नहीं सकते परंतु अभिनय प्रतिभा उच्च कोटि की रखते हैं, वे भी आगे आ सकेंगे।

पाश्र्व गायन को अक्टूबर 1935 में अंजाम दिया गया। जिसका आरंभ निर्माता-निर्देशक नितिन बोस ने न्यू थियेटर्स, कलकत्ता की बांग्ला चित्रपट भाग्यचक्र से किया था जिसमें पाश्र्व गायन के क्षेत्र में हीरा लक्ष्मी ने सर्वप्रथम अभिनेत्री बेगमपारा के लिये गाया। इसी निर्माण संस्था की हिंदी फ़िल्म धूपछाँव से निर्देशक नितिन बोस ने संगीतकार रामचंद्र बोराल के साथ मिलकर हिंदी चित्रपटों में भी पाश्र्व गायन की परंपरा का श्री गणेश किया। जिसमें तीन नारी स्वर पारूल घोष, सुप्रिया सरकार और हरिमती दुआ द्वारा कोरस के रूप में सुनाई दिए। इस प्रकार हिंदी चित्रपटों में पाश्र्व गायन परंपरा का आरंभ हुआ। पाश्र्व गायन की पद्धति लोगों को इतनी ज्यादा पसंद आई कि इसका प्रचलन प्रारंभ हो गया। संगीत के इस बदलते दौर में बहुत से कलाकारों का भी उदय हुआ। 1950 से 1970 के दशक को हिंदी चित्रपट संगीत का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस दौर का गीत-संगीत आज भी श्रोताओं के दिलों में तरो-ताज़ा है। मेंरे शोध पत्र में इस समय की प्रसिद्ध महिला कलाकारों के चित्रपट जगत में अतुलनीय योगदान पर ही प्रकाश डाला गया हैं। जिन्होंने प्रत्येक रचना की एक-एक पंक्ति को, उसमें निहित भाव को बड़े आत्मीयकता से अपने अनोखे अंदाज में व्यक्त कर पाश्र्व गायन के क्षेत्र को उंचाइयों तक पहुंचाया।

चित्रपट संगीत के सफर में वर्ष 1950 की बात करे तो उस समय संगीत बहुत प्रगति कर रहा था तथा समय के परिवर्तन से चित्रपट संगीत में भी विविधता आने लगी और भारतीय संगीत में पश्चिमी संगीत को भी शामिल किया जाने लगा। इस वर्ष चित्रपट निर्देशक पी.एल.संतोषी द्वारा निर्मित चित्रपट सरगम में भारतीय और पश्चिमी धुनों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया। इस चित्रपट के संगीत निर्देशक सी.रामचंद्र ने जहां शास्त्रीय संगीत पर आधारित युगल गीत 'जब दिल को सताए गम' (लता मंगेशकर,सरस्वती) संगीतबद्ध किया वहीं लता द्वारा गाया गया 'यार वई वई' अफ्रीकन लोक धुन पर आधारित गीत था और साथ ही गीत 'मैं हूं अलादीन' जो एक समुह गीत था में अरबी संगीत का उपयोग किया गया था।[1] नौशाद की संगीतबद्ध 'बाबुल' के गीतों ने इस साल काफी धूम मचाई थी। संगीत ने इस चित्रपट को हिट बना दिया था। शमशाद बेगम ने प्रमुख गायिका की भूमिका निभाई। जिसका एक विदाई गीत 'छोड़ बाबुल का घर मोहे पी के नगर (शमशाद बेगम, तलत महमूद) बड़ी ही हृदय स्पर्शी रचना थी। ऐसी फिल्में भारतीय संगीत में बदलाव लेकर आई। इस वर्ष 10 अगस्त, 1950 को महान संगीतकार खेमचंद्र प्रकाश ने इस संसार से विदा ली। जिन्होंने लगभग 50 चित्रपटों में यादगार संगीत दिया। उनके संगीत पर राजस्थानी लोक संगीत का काफी प्रभाव रहा। उनकी फ़िल्म 'महल' का संगीत बेहद लोकप्रिय हुआ था, जिसमें लता ने अपने स्वरों के जादू से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया था और उनके द्वारा गाया गया एक गीत 'आएगा आने वाला' हिंदी चित्रपट संगीत के अमर गीतों में से एक है।[2] संगीत रसिकों द्वारा उनके स्वरबद्ध गीतों को भुला पाना काफी कठिन है।

वर्ष 1951 में निर्माता नंदलाल जसवंतलाल ने चित्रपट सनम का निर्माण किया। इस में कमर जलालाबादी के गीतों को प्रसिद्ध संगीत निर्देशक जोड़ी हुस्नलाल-भगतराम ने संगीतबद्ध किया। इस चित्रपट के संगीत के लिए उन्होंने पंजाबी संगीत के साथ-साथ अरबी संगीत में वाद्यो का खूबसूरत इस्तेमाल किया। इसके गीतों में ओ सनम मैं तुझे पुकारूं सनम सनम(मो.रफी, सुरैया), होठों पे किसी का नाम(सुरैया) और नया नया है प्यार (सुरैया,शमशाद) आदि लोकप्रिय हुए। इसी वर्ष 1951 में अभिनेता राजकपूर ने

चित्रपट आवारा का निर्देशन किया। चित्रपट में राजकपूर और नरगिस के अभिनय के साथ-साथ इसके गीत भी बहुत लोकप्रिय हुए। इन गीतों को प्रसिद्ध जोड़ी शंकर-जयकिशन ने संगीत प्रदान किया। घर आया मेरा परदेसी, अब रात गुज़रने वाली हैं(लता), एक दो तीन आजा मौसम है रंगीन(शमशाद) आदि गीत लोकप्रिय हुए।[3] ''इस चित्रपट में राज कपूर के अभिनय को टाइम मैगज़ीन ने सिनेमा के दस सबसे महान प्रदर्शनों में से एक माना है।'' इस साल 'नौजवान' से गीतकार साहिर लुधियानवी और संगीतकार एस.डी.बर्मन की जोड़ी बनी जिसने आगे चलकर अनेक चित्रपटों में काफी मधुर गीतों की रचना की। इस जोड़ी की एक और फ़िल्म बाजी के गीत 'तदबीर से बिगड़ी हुई तकदीर बना ले'(गीतादत्त) ने ऐसी धूम मचाई कि ये दोनों सफलता के उस मुकाम तक पहुँच गये जहाँ से इन्होंने फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।[4]

फ़िल्म अलबेला में राजेन्द्र कृष्ण के गीतों को सी.रामचंद्र ने पाश्चात्य रंग में डूबोकर ऐसे अद्भुत संगीत की रचना की जो आज भी श्रोताओं का मन मोहकर उन्हें झूमने पर विवश कर देता है। निर्माता-निर्देशक-नायक भगवान दादा ने अपनी विशिष्ट नृत्य शैली में इन गीतों का फ़िल्मांकन भी बड़ी खूबसूरती से किया था। 'शोला जो भड़के दिल मेरा धड़के' और 'भोली सूरत दिल के खोटे(लता मंगेशकर, सी. रामचंद्र) जैसे मस्ती भरे तथा छेड़-छाड़ वाले गीतों ने इस फ़िल्म को सदाबहार शास्त्रीय एवं संगीतमय हिट फ़िल्म बना दिया था। दामन में के.दत्ता के संगीत निर्देशन में लता व आशा भोसले ने पहली बार मिलकर गाया 'ये रूकी रूकी हवाँए'। यह इन दोनों महान पाश्र्व गायिकाओं का एक साथ मिलकर गाया प्रथम युगल गीत रहा। इसी फ़िल्म के एक गीत में लता मंगेशकर ने अपना नाम भी उच्चारित किया था। राजा मेंहदी अली खाँ द्वारा लिखित इस गीत के बोल थे - 'तिरूलिल्ला-3 ला, गाये लता गाये लता गाये लता गान'।[5] इस दशक में चित्रपट संगीत के क्षेत्र में जैसे-जैसे समय गुजरता गया इसके साथ ही मधुर गीतों की बौछार होती गई। वर्ष 1952 की बैजूबावरा संगीतकार नौशाद के संगीत व्यवसाय की सर्वोत्कृष्ट कृति हैं। इस फ़िल्म से वे सफलता और लोकप्रियता की ऐसी ऊँचाई पर पहुँच गये जहाँ से संभवतया और ऊपर कोई चढ़ाई नहीं होती। शास्त्रीय रागों पर आधारित होते हुए भी इस फ़िल्म के गीतों ने बेहद लोकप्रियता प्राप्त की। लता और मो.रफ़ी की आवाज़ों ने इसके गानों में एक जादुई आकर्षण-सा भर दिया था। आन चित्रपट में भी नौशाद के निर्देशन में लता एवं शमशाद ने अत्यंत मधुर स्वर लहरियाँ बिखेरी। इसके भी सभी गीत श्रोताओं की जुबान पर चढ़े।

इस वर्ष 3 दिसंबर, 1952 को 'बिनाका गीतमाला' का पहला साप्ताहिक कार्यक्रम प्रसारित हुआ था और इसके बाद 4 अप्रैल 1994 तक प्रत्येक सप्ताह इसका प्रसारण जारी रहा। इस प्रकार यह रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में सबसे अधिक लोकप्रिय तथा लंबी अवधि तक चलने वाला कार्यक्रम था जिसे लोकप्रिय गीतों का ख़जाना तथा उनकी शोहरत को आँकने का एक विश्वसनीय पैमाना माना जाता था। देश की सीमाओं से पार हिंदी सिने संगीत को लोकप्रियता हासिल कराने में इसका काफी बड़ा योगदान रहा था। चित्रपट संगीत के इस विशाल क्षेत्र में योगदान देने वालों को सम्मानित करने के लिए 1953 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और फिल्मफेयर पुरस्कार शुरू किए गये। शुरुआत में फिल्मफेयर पुरस्कार केवल पाँच श्रेणियों में दिया जाता था आर्थात् सर्वश्रेष्ठ चित्रपट, चित्रपट निर्माता, अभिनेता-अभिनेत्री और संगीत निर्देशक, लेकिन 1957 में गीतकारों और गायकों के लिये भी इस पुरस्कार को बढाया गया। नौशाद ने अपनी फिल्म बैजूबावरा के लिए 1953 में सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक का पहला फिल्मफेयर पुरस्कार जीता। हांलाकि ये चित्रपट 1952 में रिलीज़ हुई थी, लेकिन इसके गीत 1953 तक बहुत लोकप्रिय बने रहे और उन्हे प्रतियोगिता में शामिल किया गया।[6]

संगीतकार शौकत हुसैन ने नाशाद के नाम से 'नगमा' में प्रथम बार संगीत दिया। इसमें शमशाद बेगम के गाए दो गीतों-'बड़ी मुश्किल से दिल की बेक़रारी को क़रार आया..' तथा 'काहे जादू किया मुझको इतना बता जादूगर बालमा...' ने धूम मचा दी थी। अनारकली में सी.रामचंद्र ने अत्यंत कर्णप्रिय संगीत दिया और 'ये ज़िन्दगी उसी की है....' जैसे सदाबहार गीत की रचना की। यह

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

हिंदी चित्रपट संगीत के कालजयी गीतों में से एक है जिसने लता की प्रसिद्धि में बड़ा योगदान रहा और निर्विवाद रूप से तत्कालीन सर्वश्रेष्ठ गायिका प्रमाणित कर दिया। इस वर्ष दिसंबर माह में सुप्रसिद्ध संगीतकार गुलाम हैदर का पाकिस्तान में निधन हो गया। हिंदी फ़िल्मों में पंजाबी संगीत के समावेश का श्रेय उन्हें दिया जाता है। इसके बाद ''वर्ष 1954 में चित्रपट कार सोहराब मोदी द्वारा निर्मित मिर्ज़ा गालिब आई। इसमें संगीतकार गुलाम महोम्मद ने शायर गालिब की गज़लों को संगीतबद्ध कर मो.रफी, लता और सुरैया से गवाया। इस समय संगीत निर्देशक नौशाद और मदन मोहन की गज़लों का दौर शुरू नहीं हुआ था।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि गज़लों को चित्रपट संगीत के नए रूप में लाने का श्रेय गुलाम महोम्मद को जाता है, उन्होंने इस चित्रपट की गज़लों को शानदार संगीत दिया। राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत इस फ़िल्म में सुरैया द्वारा गायी गज़लें बहुत लोकप्रिय हुई। इस चित्रपट ने नायिका-गायिका सुरैया को बुलबुले हज़ार-दास्तान की संज्ञा दिलवाई।''[7] गायिका सुमन कल्याणपुर ने इस साल मंगू और दरवाजा फ़िल्मों में अपना स्वर देकर पाश्र्व गायिका का स्थान ग्रहण किया।[8] सुबह का तारा फ़िल्म का गीत 'भाभी आई...' गायिका उषा मंगेशकर का गाया पहला फ़िल्मी गीत था।[9] इस वर्ष नागिन, जागृति (हेमन्त कुमार), टैक्सी ड्राईवर (एस.डी.बर्मन), नास्तिक (सी.रामचंद्र), शबाब, अमर (नौशाद), आरपार (ओ.पी.नैयर), बादबान (तिमिर बरन व एस.के.पाल), वारिस (अनिल बिस्वास), बादशाह (शंकर जयकिशन), आदि फ़िल्मों के गीतों ने इस वर्ष जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की, जिसमें लता ,आशा, शमशाद बेगम, मुबारक बेगम, गीतादत्त इन प्रमुख गायिकाओं का चित्रपटों को लोकप्रिय बनाने में काफी ज्यादा योगदान रहा। प्रसिद्ध चित्रपट अभिनेता राज कपूर ने 1955 में चित्रपट श्री 420 बनाई।

शैलेंद्र और हसरत जसपुरी के गीतों को संगीत निर्देशक जोड़ी शंकर-जयकिशन ने संगीत दिया। राग भैरवी पर आधारित रमैया वस्ता वइया (रफी, लता,मुकेश) गीत जहां दक्षिण भारतीय संगीत का रंग बिखेरता है वहीं राग यमनी बिलावल पर आधारित इचक दाना बीचक दाना(लता,मुकेश) गीत में उत्तर ग्रामीण रस प्रयुक्त किया गया है। इस में राग बागेश्री को आधार बनाकर प्यार हुआ इकरार हुआ है(लता, मुकेश) जैसे गीतों को शानदार धुनों में बांधा गया।[10] 'बैजू बावरा' के बाद उड़न खटोला में संगीतकार नौशाद एक बार फिर बुलंदी पर नज़र आए। यह सही माइने में एक संगीत प्रधान फ़िल्म थी। ऐसा लगता हैं मानो फिल्म का ताना-बाना इसके मधुर गीतों को संजोने के लिए ही बुना गया था। गीतों को सुनकर स्पष्ट आभास हो जाता है कि एक-एक गीत पर गीतकार, संगीतकार और गायकों ने कितनी अधिक मेहनत की थी। इसके अतिरिक्त इस साल 'देवदास', हाउस नं. 44 (एस.डी.बर्मन), झनक-झनक पायल बाजे (बसन्त देसाई), मिस्टर एण्ड मिसेज़ 55 (ओ.पी.नैयर), बारादरी (नाशाद), तांगावाली (सलिल चैधरी) आदि चित्रपटों के गीतों ने अपार लोकप्रियता हासिल की। वर्ष 1956 में चित्रपट कार अनंत ठाकुर ने चोरी-चोरी का निर्माण किया। शैलेंद्र और हसरत जयपुरी द्वारा लिखित गीतों को शंकर-जयकिशन ने अपनी धुनों से सजाया। इस चित्रपट के गीतों में ये रात भीगी भीगी सी, आजा सनम मधुर चांदनी में हम, जहां में जाती हूं वहीं चले आते हो (लता, मन्ना डे), और पंछी बनू उड़ती फिरू इसके अलावा एक बहुत ही प्रशंसनीय गीत रसिक बलमा जो राग शुद्ध कल्याण पर आधारित बहुत ही प्रंशसनीय गीत था बहुत लोकप्रिय हुआ।

'बसंत बहार' से शंकर जयकिशन ने सिद्ध कर दिया कि शास्त्रीय रागों पर आधारित संगीत भी वे बड़ी खूबी से पेश कर सकते हैं। नैन मिले चैन कहाँ(बागेशवरी/लता,मन्ना डे), कर गयो रे कर गयो रे (मिश्र पीलू/लता, आशा), मैं पिया तेरी(भैरवी/लता)। इस चित्रपट की प्रत्येक गीत रचना सुंदर और अविस्मरणीय हैं। प्रमुख गायक कलाकारों ने इन रचनाओं को और अधिक मनमोहक बना दिया था। चित्रपट 'सी.आई.डी'(ओ.पी.नैयर) के पंजाबी प्रभाव लिए झूमते-मचलते गीत-संगीत को भी काफी पसंद किया गया। वर्ष 1957 में चित्रपट निर्देशक बी.आर.चोपड़ा द्वारा निर्मित नया दौर बहुत प्रसिद्ध हुई। इस चित्रपट में गाए गीतों ने ही आशा भोंसले को एक नई पहचान दिलवाई। इसमें पंजाबी रंग-ढ़ग में बंधे गीतों में कव्वालीयां उड़े जब जब जुल्फें तेरी (रफी,आशा),

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

रेशमी सलवार कुरता जाली का (आशा,शमशाद), इसके अलावा मांग के हाथ तुम्हारा और साथी हाथ बढ़ाना (आशा,रफी) आदि शामिल है। इस चित्रपट में गीतकार साहिर लुधियानवी और संगीतकार ओ.पी.नैयर ने कमाल के गीत बनाएं।

इसी वर्ष एक ओर लोकप्रिय फिल्म मदर इंडिया थी जिसका निर्माण महबूब ने किया इसके संगीत निर्देशक नौशाद ने चित्रपट की स्थिति के अनुरूप बहुत ही दर्दनाक धुनें तैयार की। जिसमें उपरोक्त प्रमुख गायिकाओं में शमशाद बेगम द्वारा गाया गया विदाई गीत पी के घर आज प्यारी, होली आई रे कन्हाई, नगरी नगरी द्वारे द्वारे (लता), दुनियां में आये हैं तो जीना ही पड़ेगा (लता, मीना, उषा, आशा) जैसे गीत हमेशा के लिए अमर हो गए। यह चित्रपट इस सदी की सबसे सफल और मील का पत्थर साबित हुई। साल 1958 की बात करें तो चित्रपट निर्माता विमल राय ने अभिनेता दिलीप कुमार और अभिनेत्री वैयजयंती माला को लेकर चित्रपट मधुमती बनाई। शैलेंद्र द्वारा लिखित गीत आजा रे परदेसी को सलिल चैधरी ने संगीतबद्ध किया। इस गीत को लता मंगेशकर ने इतनी मिठास के साथ पेश किया कि लता को पाश्र्व गायन के लिए पहला फिल्मफेयर पुरस्कार मिला।[11]

इसमें सलिल ने कुमाउनी लोक संगीत का सुंदर उपयोग किया। ‘‘इसके गीतों में घड़ी घड़ी मोरा दिल धड़के(लता) में बागेश्री को आधार मानकर मैडोलिन का सुंदर प्रयोग किया गया।’’[12] मिर्ज़ा गालिब के बाद इस वर्ष चित्रपट ‘मलिक’ में सुरैया ने तलत महमूद के साथ एक लोकप्रिय गीत दिया ‘मन धीरे-धीरे गाए रे मालूम नहीं क्यों...’। श्री आदिनारायण राव के संगीत निर्देशन में बनी स्वर्ण सुंदरी चित्रपट में शास्त्रीय संगीत पर आधारित कुछ सुंदर रचनाएँ हैं जो मनमोहक हैं, कुहू कूहू बोले कोयलिया(राग सोहनी/लता, मो.रफ़ी), जा रे नटखट पिया(मालकौंस/सुधा मल्होत्रा, लता), शम्भू सुन लो मेरी पुकार(चंद्रकौंस/लता मंगेशकर) आदि। इसके अलावा ‘यहूदी’, शरारत(शंकर जयकिशन), ‘चलती का नाम गाड़ी’, ‘काला पानी’, सौलहवाँ साल(एस.डी.बर्मन), ‘फागुन’, हावड़ा ब्रिज (ओ.पी.नैयर), दिल्ली का ठग(रवि), अदालत(मदन मोहन) आदि चित्रपटों के गीतों को भी अपार लोकप्रियता मिली। वर्ष 1959 में चित्रपट भाभी (1957) से प्रसिद्धी प्राप्त करने वाले संगीत निर्देशक चित्रगुप्त ने फ़िल्म बरखा में मधुर संगीत दिया। इसके निर्माता कृष्णन-पंजू थे। राजेन्द्र कृष्ण द्वारा लिखित गीतों के लिये चित्रगुप्त ने सुरीली धुनों की रचना की।

इन गीतों में बरखा बहार आई, तड़पाओगे तड़पा लो(लता) और एक रात में दो-दो चाँद खिले(लता-मुकेश) आदि सदाबहार गीत हैं। अगले वर्ष 1960 में निर्देशक के.आसिफ ने दिलीप कुमार और मधुबाला को लेकर मुगल-ए-आज़म का निर्माण किया। इसका संगीत निर्देशन नौशाद साहब द्वारा किया गया। इसके गीतों में जब प्यार किया तो डरना क्या, मोहे पनघट पे नंदलाल छेड़ गयो रे, मोहब्बत की झूठी कहानी, बेकस पे करम कीजिए जैसे गीतों ने लता मंगेशकर की प्रसिद्धी में चार चाँद लगा दिये। प्यार किया तो डरना क्या गीत को एक विशेष प्रभाव देने के लिये बाथरूम में रिकार्ड किया गया। क्योंकि उस समय गूंज बनाने के लिए ‘सिंक साउंड तकनीक नहीं थी और इस समय का एक अन्य गीत प्रेम जोगन बनके के लिए बड़े गुलाम अली ख़ान की विशेष सहमति ली गई थी। बरसात की रात से क़व्वालीयों को फ़िल्मों में एक ऊँचा दर्जा मिला जिसमें संगीतकार रोशन और गीतकार साहिर ने बेहद सुरीली क़व्वालीयाँ रचीं जो श्रोताओं द्वारा काफी पसंद की गई। ये क़व्वालीयाँ इस फ़िल्म की कहानी की आत्मा थीं जिसमें ‘ये ईश्क ईश्क है ईश्क़ ईश्क़’(सुधा मल्होत्रा व अन्य साथी) और इस फ़िल्म का एक शास्त्रीय प्रधान गीत ‘गरजत बरसत सावन’(कमल बारोट, सुमन कल्याणपुर) जो मल्हार अंग के रागों मेघ मल्हार और मियां मल्हार पर आधारित एक सुंदर रचना थी।[13] बहुत लोकप्रिय हुआ था।

निर्देशक अमरजीत द्वारा वर्ष 1961 में फ़िल्म हम दोनों बनाई गई। इसकी कहानी द्वित्तीय विश्वयुद्ध पर आधारित थी। इसमें संगीतकार जयदेव ने साहिर लुधियानवी के गीतों को संगीतबद्ध किया। इस फ़िल्म के गीतों में अभी न जाओ छोड़ कर(आशा,रफी) गीत शामिल हैं। इसमें अभीनेत्री नंदा पर फ़िल्माया गया गीत अल्लाह तेरो नाम को लता ने राग गोड़ सांरग में इतनी मिठास से गाया था कि कई निर्माताओं ने जयदेव से संपर्क किया और उनसे इस तरह के ओर गीतों की रचना करने को कहा। ये एक आस्था पूर्ण

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

गीत था जो भारत की संस्कृति का मानक बन चुका हैं। उसी वर्ष 1961 में सुबोध मुखर्जी द्वारा फ़िल्म जंगली निर्मित की गई। इसके गीत शैलेन्द्र और हसरत जयपूरी द्वारा लिखे गए। चित्रपट के संगीत के लिए शंकर-जयकिशन ने आर्केस्ट्रा में उपयोग किये जाने वाले उपकरणों की संख्या में वृद्धि की। भाभी की चूड़ियाँ में गीतकार पं.नरेन्द्र शर्मा और संगीतकार सुधीर फड़के ने एक बेहद खूबसूरत गीत दिया-ज्योति कलश छलके...(लता मंगेशकर)। आज भी श्रोता इस गीत को भाव-विभोर होकर सुनते हैं।[14]

गंगा जमुना में नौशाद ने उत्तर भारतीय लोक धुनों का काफी खूबसूरती से प्रयोग किया। गुलाम महोम्मद के संगीत से रोशन शमा में सुरैया ने एक बार फिर अपनी आवाज़ का जादू बिखेरा और कई मनमोहक गीत दिये। हमारी याद आएगी में स्नेहल भाटकर द्वारा संगीतबद्ध में मुबारक बेगम का गाया गीत ‘कभी तन्हाइयों में यूँ हमारी याद आएगी’ श्रोताओं को अभी भी याद है। संगीतकार सचिन देव बर्मन के पुत्र राहुल देव बर्मन ने छोटे नवाब से चित्रपट संगीत की दुनिया में बतौर संगीतकार कदम रखा। इस चित्रपट का गीत ‘मतवाली आँखों वाले’ (लता,मो.रफ़ी) काफी लोकप्रिय हुआ था। वर्ष 1962 में निर्माता बिरन नाग द्वारा बीस साल बाद रिलीज़ की गई। इसमें हेमंत कुमार ने कमाल का संगीत दिया।

इस फ़िल्म के एक गीत के लिये लता ने विविध भारती के राष्ट्रीय रेडीयो नेटवर्क से प्रसारित ‘जयमाला’ कार्यक्रम में बताया था कि गंभीर बिमारी के कारण उन्हें डर था कि उनकी आवाज़ खो गई हैं पर कहीं दीप जले कहीं दिल गीत की वजह से उन्होंने अपना आत्मविश्वास वापस पा लिया। इस गीत के लिए इस वर्ष उन्हें सर्वश्रेष्ठ गायिका का फ़िल्मफेयर पुरस्कार भी मिला। मैं चुप रहूँगी में गीतकार राजेन्द्र कृष्ण ने एक संस्कृत श्लोक ‘त्वमेव माता च पिता त्वमेव’ को हिंदी शब्दों में ढालकर बच्चों को एक सदाबहार प्रार्थना ‘तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो..’ (लता मंगेशकर) दी जो आज भी कई विद्यालयों में गाई जाती हैं। इस फिल्म में चित्रगुप्त का कर्णप्रिय संगीत था। बात एक रात की में एस.डी.बर्मन के संगीत से सजे गीतों ने भी संगीत प्रमियों से प्रशंसा हासिल की थी। इस चित्रपट का एक गीत ना तुम हमें जानो न हम तुम्हें जाने’ (सुमन कल्याणपुर, हेमंत कुमार) श्रोताओं द्वारा बेहद पसंद किया गया था।[15] अगले वर्ष 1963 में फ़िल्म निर्माता एस. सदीक ने ताजमहल बनाई। इसके संगीत निर्देशक रोशन ने इसमें मोहित करने वाला संगीत दिया। इसके गीतों में जुर्म-ए-उल्फत(लता) और जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा (रफ़ी, लता) आज भी श्रोताओं की ज़ुबान पर हैं। हमराही में शंकर-जयकिशन के दिलकश संगीत ने एक बार फिर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। जिसमें उन्होंने ‘मुझको अपने गले लगालो..’ गीत में पाश्र्व गायिका मुबारक बेगम की आवाज़ का बड़ी खूबसूरती से उपयोग किया। पारसमणी का एक मस्ती भरा गीत ‘हस्ता हुआ नूरानी चेहरा’(लता मंगेशकर, कमल बारोट) तो इस वर्ष का सर्वाधिक मशहूर गीत रहा। रुस्तम सोहराब में सुरैया की मधुर आवाज़ पुनः सुनाई दी, लेकिन यह उनकी अंतिम फिल्म बन गई। वे चाहती तो नायिका न सही पर पाश्र्व गायिका के रूप में अनेक वर्षो तक सक्रिय रह सकती थीं, किंतु सुरैया ने तो सिर्फ अपने ही किरदार को आवाज़ देने की सोच रखी थी।

वर्ष 1964 में निर्माता केदार शर्मा ने प्रसिद्ध फिल्म चित्रलेखा का निर्माण किया। फ़िल्म में साहिर लुधियानवी के गीतों के लिए संगीत निर्देशक रोशन ने शास्त्रीय संगीत पर आधारित धुनों की रचना की। रोशन शास्त्रीय संगीत के अच्छे जानकार थे। उन्होंने मेहर घराने के प्रसिद्ध बीनकार उस्ताद अल्लाउद्दीन खान से संगीत की शिक्षा प्राप्त की।[16] इस फ़िल्म में रोशन ने राग कामोद पर आधारित गीत ए री जाने न दूंगी और संसार से भागे फिरते हो(लता) जैसे गीतों की रचना की। वर्ष 1965 में निर्देशक विजय आनंद द्वारा गाइड का निर्माण किया गया। यह फिल्म लेखक आर.के. नारायण के एक उपन्यास गाइड पर आधारित थी। ‘‘जिसमें लता द्वारा गाया गया गीत मोसे छल किए जाए में विश्व प्रसिद्ध संतूर वादक पं. शिव कुमार ने संतूर वादन न करके खुद तबला वादन किया।’’[17] इस चित्रपट की प्रसिद्धी का श्रेय संगीत निर्देशक एस.डी.बर्मन को जाता हैं। सुमधुर तथा मनमोहक संगीत से सजी कई फिल्में इस वर्ष प्रदिर्शित हुई। रवि के संगीत से सजी वक्त ‘आगे भी जाने ना तू (आशा भोसले), ‘दिन है बहार के तेरे मेरे इकरार

के'(आशा,महेंद्र कपूर) तथा खानदान 'मेरी मिट्टी में मिल गई जवानी'(उषा मंगेशकर,आशा) 'तुम्ही मेरे मंदिर तुम्हीं मेरी पूजा'(लता) आदि इन सभी गीतों का फ़िल्म को लोकप्रिय बनाने में काफी बड़ा योगदान रहा।

खानदान चित्रपट के इस गीत 'तुम्ही मेरे मंदिर' ने लता को सर्वश्रेष्ठ गायिका का फिल्मफेयर पुरस्कार भी दिलवाया। चित्रपट निर्माता ऋषीकेश मुखर्जी ने वर्ष 1966 में चित्रपट अनुपमा के संगीत के लिए सुरीली धुनों की रचना की। इसमें लता मंगेश्कर ने गीत धीरे-धीरे मचल ए दिले बेकरार और कुछ दिल ने कहा बहुत कोमलता के साथ गाया। राहुल देव बर्मन ने तीसरी मंजिल के संगीत द्वारा अपनी विशिष्ट शैली तथा भविष्य के संगीत का परिचय दिया। जिसमें आशा भोसले के द्वारा गाए युगल गीतों ने पूरे देश में धूम मचा दी थी। जिसमें आजा-आजा मैं हूं प्यार तेरा, ओ मेरे सोना रे सोना रे तथा ओ हंसीना ज़ुल्फ़ों वाली आदि कर्णप्रिय गीत शामिल हैं। बदलते वातावरण और परिवेश में नयी पीढ़ी को शायद ऐसे ही पश्चिमी प्रभाव वाले गीत पसंद हैं।[18] इसके अगले वर्ष 1967 में निर्देशक समीर गांगुली ने चित्रपट शार्गिद का निर्माण किया। इसमें संगीत निर्देशक जोड़ी लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल ने भारतीय संगीत के साथ-साथ पश्चिमी संगीत का भी इस्तेमाल किया। इसमें पश्चिमी धुनों पर आधारित राक एंड रोल में तेज गती वाले गीतों की रचना में दिल विल प्यार व्यार और साथ मीठी धुनों में बांधा हुआ भजन कान्हा आन पड़ी मैं तेरे द्वार(लता) आदि गीतों ने श्रोताओं को मोहित किया। जे.पी कौशिक की संगीतबद्ध बम्बई रात की बाहों में फ़िल्म से नायिका-गायिका सुलक्षणा पंडित ने महेंद्र कपूर के साथ अपना पहला गीत 'दिल जो दुनियां के ग़मों-दर्द से घबराया है' गाया था। इसी वर्ष 'तकदीर' में सुलक्षणा का लता के साथ गाया गीत 'सात समुंदर पार से, गुड़ियों के बाजार से' श्रोताओं ने काफी पसंद किया था।[19] इसके बाद अगले दो दशकों तक ये सिलसिला जारी रहा।

इस दौरान उनके कई मनमोहक गीत संगीत-प्रमियों को लुभाते रहे। आशा भोसले को इस वर्ष रवि की संगीत निर्देशित फिल्म दसलाख में गाए एक गीत 'गरीबों की सुनो' के लिए सर्वश्रेष्ठ गायिका का पुरस्कार मिला था। वर्ष 1968 में फ़िल्म पड़ोसन का निर्देशन निर्माता ज्योति स्वरूप ने किया। इसमें राजेन्द्र कृष्ण द्वारा लिखित गीतों को आर.डी.बर्मन ने मीठी धुनों से सजाया। इसके गीतों में मैं चली मैं चली देखो प्यार की गली(लता,आशा) बड़ा ही मनमोहक गीत गाया जिसे काफी पसंद भी किया गया। आशा भोसले को इस वर्ष एक बार फिर फ़िल्म दो शिकार में उनके द्वारा गाए गीत 'परदे में रहने दो' के लिए सर्वश्रेष्ठ गायिका का पुरस्कार मिला। ''संगीतकार शंकर-जयकिशन ने फ़िल्म ब्रह्मचारी से इलेक्ट्रिक सिंथेसाइज़र नामक पाश्चात्य वाद्य यंत्र का पहली बार प्रयोग किया। इस वाद्य यंत्र ने गागर में सागर का काम किया जिससे लगभग चालीस प्रकार की ध्वनियाँ निकाली जा सकती हैं। इस वाद्य के आने से रिकार्डिंग का खर्चा भी कम हुआ क्योंकि एक अकेले उपकरण से अनेक वाद्यों की आवाज़ें एक साथ मिल सकती हैं।''[20] इस चित्रपट का एक गीत 'आज कल तेरे मेरे प्यार के चर्चे'(सुमन कल्याणपुर, मो.रफ़ी) ने चित्रपट जगत में धूम मचा दी थी।

निर्माता राज खोसला ने वर्ष 1969 में फ़िल्म चिराग का निर्माण किया। इसमें संगीत निर्देशक मदन मोहन ने मजरूह सुल्तानपुरी के गीतों को इस तरह से संगीतबद्ध किया कि वह विश्व प्रसिद्ध हो गए। इसमें छाई बरखा बहार (लता) जैसे गीत श्रोताओं के दिल में बस गए। इस दशक के अंतिम चरण में बहुत लोकप्रिय फ़िल्में बनीं। लता मंगेशकर को इस वर्ष पद्म भूषण सम्मान से नवाज़ा गया और जीने की राह फिल्म में गाए 'आप मुझे अच्छे लगने लगे' गीत के लिए सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार भी मिला। चैथी बार उन्हें फ़िल्मफेयर पुरस्कार से नवाज़ा गया था। इसके बाद उन्होंने आगे इस पुरस्कार के लिए अपने नाम पर विचार करने के लिए कहकर मना कर दिया कि नई गायिकाओं को भी अवसर और प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। पाश्र्व गायिका सुमन कल्याणपुर को संगीत जगत में अविस्मरणीय योगदान देने के लिए गत वर्षो 1966, 1968 और इस वर्ष 1969 तक तीन बार सुर सिंगार का 'मियां तानसेन' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।[21]

वर्ष 1970 में निर्देशक चेतन आनंद द्वारा फ़िल्म हीर-रांझा बनाई गई। कैफ़ी आज़मी द्वारा लिखित गीतों को मदन मोहन ने संगीतबद्ध किया। इसमें जहां प्रेम पूर्वक गीत मिलो न तुम तो हम घबराँए (लता) और मेरी दुनियां में तुम आई (लता,रफ़ी) जैसे गीत है वहीं दूसरी और उदासी से भरपूर गीत दो दिल टूटे (लता) आदि खूबसूरत गीत बनाएं गए। इस वर्ष एक और फ़िल्म जानी मेरा नाम निर्माता विजय आनंद द्वारा निर्मित की गई। इसमें इंदीवर के लिखें गीतों को कल्याण जी-आनंद जी ने संगीत दिया। इसके गीतों में हो बाबुल प्यारे(लता) और वादा तो निभाया(आशा,किशोर) आदि गीत इस युग का खज़ाना हैं। इस वर्ष प्रख्यात शायर शकील बदायूँनी का निधन हो गया। जिन्होंने अपने गीतों में मानवीय संवेदना, संयोग-वियोग, प्रेम-श्रृंगार, भक्ति, दर्शन आदि सभी रसों एवं भावों का समावेश किया। दर्द, मेला, बाबुल, दीदार, आन, बैजूबावरा, मदर इंडिया जैसी फिल्मों के गीतों को कौन भूल सकता है।

आज भी उनके गीतों की खुमारी में डूब जाने को जी चाहता है। वर्ष 1971 की बात करें तो इस वर्ष चित्रपट पाकीज़ा में संगीतकार गुलाम मुहम्मद तथा नौशाद ने अपने कैरियर का सर्वश्रेष्ठ संगीत दिया था। चित्रपट की सफलता में इसके संगीत का काफी बड़ा योगदान था। जिसमें लता मंगेशकर के द्वारा गाया गीत 'यूं ही कोई मिल गया था' और वाणी जयराम की मधुर आवाज में गाया गीत 'मोरा साजन सौतन घर जाए' श्रोताओं द्वारा बहुत पसंद किए गए थे। भारतीय शास्त्रीय व लोक संगीत की श्रेष्ठता को एक बार फिर इस फिल्म ने सिद्ध किया। लंबे समय तक इसके गीत हर घर में गूंजते रहे। इस वर्ष अंदाज के गीत 'है ना बोलो,पापा को मम्मी से प्यार है' से गायिका सुषमा श्रेष्ठ का तथा गुड्डी के 'बोले रे पपीहरा' गीत से गायिका वाणी जयराम का चित्रपटों में प्रवेश हुआ। इन दोनों गीतों को काफी प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी। कनु राय की संगीतबद्ध अनुभव गीतादत्त की अंतिम फ़िल्म साबित हुई। बेईमान के लिए वर्ष 1972 में संगीतकार शंकर जयकिशन को सर्वश्रेष्ठ संगीतकार का पुरस्कार मिला जिसका एक गीत 'ये राखी बंधन है ऐसा'(लता मंगेशकर,मुकेश) इस गीत में भाई बहन के प्यार को बड़ी खूबसूरती के साथ दर्शाया गया है। इतना ज्यादा लोकप्रिय हुआ कि आज तक भी ये गीत संगीत श्रोता भूल नहीं पाए हैं। रक्षा बंधन के त्योहार पर ये गीत अक्सर सुनाई देता हैं।

गीत 'दम मारो दम' हरे रामा हरे कृष्णा के लिए आशा भोसले को सर्वश्रेष्ठ गायिका का फिल्मफेयर पुरस्कार दिया गया था ये गीत उन्होंने उषा अय्यर के साथ मिलकर गाया था। पाश्र्व गायिका वाणी जयराम को गत वर्ष प्रदर्शित फ़िल्म गुड्डी में गाए एक शास्त्रीय प्रधान गीत 'बोले रे पपीहरा' के लिए इस वर्ष सुर सिंगार संसद, मुंबई द्वारा मियां तानसेन तथा चित्रपटों में 'शास्त्रीय गीत' का सर्वश्रेष्ठ फिल्म पाश्र्वगायिका पुरस्कार भी दिया गया।[22] हिंदी सिने जगत को इस साल भारी क्षती का सामना भी करना पड़ा था क्योंकि पांचवे एवं छटे दशक की सुप्रसिद्ध पाश्र्व गायिका गीतादत्त का इस वर्ष 20 जुलाई को निधन हो गया था जिन्होंने बहुत सी फ़िल्मों में अपनी आवाज़ का जादू दिखाया था।[23] संगीतकार परदेसी के संगीत से सजी चित्रपट बाँकेलाल में 'हम किससे कहें क्या शिकवा करें'(शमशाद बेगम,आशा भोसले) उदासी भरा युगल गीत गाकर शमशाद ने धीरे-धीरे पाश्र्व गायन करना कम कर दिया था।[24]

एस.डी.बर्मन की संगीतबद्ध फागुन(1973) के 'पिया संग खेलो होरी, फागुन आया रे'(लता मंगेशकर), 'दूसरो ना कोई मेरो तो गिरधर गोपाल'(उषा मंगेशकर) गीत इस वर्ष बहुत पसंद किए गए। आशा भोसले को इस वर्ष एक बार फिर से सर्वश्रेष्ठ गायिका का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला गीत 'होने लगी है रात जवाँ' नयना के लिए। सुर साधिका लता मंगेशकर को भी इस वर्ष परिचय के गीत 'बीते ना बिताए रैंना' के लिए सर्वश्रेष्ठ गायिका के राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से नवाज़ा गया। इन दोनों गायिकाओं की उपलब्धियों से ये अंदाजा लगा सकते हैं कि ये अपने समय की कितनी लोकप्रिय गायिकाएँ रही। वर्ष 1974 में धुंए की लकीर में संगीतकार श्यामजी-घनश्यामजी के निर्देशन में वाणी जयराम का नितिन मुकेश के साथ गाया 'तेरी झील सी गहरी आँखों में' बहुत लोकप्रिय हुआ। लता मंगेशकर को इस वर्ष फिर एक बार कोरा कागज़ में गाए रुठे रुठे पिया मनाऊँ कैसे' के लिए राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार से नवाज़ा गया।

आशा भोसले को सर्वश्रेष्ठ गायिका का फिल्मफेयर पुरस्कार दिया गया चित्रपट प्राण जाए पर वचन न जाए में उनके द्वारा गाए गीत 'चैन से हमको कभी' के लिए। इस वर्ष सुषमा श्रेष्ठ को गत वर्ष आई फ़िल्म आ गले लग जा में उनके द्वारा गाए एक गीत 'तेरा मुझसे है पहले का नाता कोई' के लिए सर्वश्रेष्ठ गायिका के फ़िल्मफेयर पुरस्कार के लिए नामांकित भी किया गया। ख़य्याम के संगीत से सजी वर्ष 1975 की फिल्म संकल्प में सुलक्षणा पंडित के द्वारा गाया गीत 'तू ही सागर तू ही किनारा' बहुत ज्यादा लोकप्रिय हुआ जिसके लिए इन्हें सर्वश्रेष्ठ गायिका के फ़िल्मफेयर पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। इस वर्ष कवि प्रदीप द्वारा लिखित और सी. अर्जुन द्वारा संगीतबद्ध धार्मिक प्रधान फ़िल्म जय संतोषी माँ के गीतों ने धूम मचाई। इस फ़िल्म के गीतों ने पाश्र्व गायिका उषा मंगेशकर की आवाज़ को हर घर और मंदिर में पहqaचा दिया था। जिसके लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ गायिका का पुरस्कार भी मिला। गत वर्ष आई फ़िल्म 'रेशम की डोरी' में गाए सुरीले गीत 'बहना ने भाई की कलाई से' के लिए वर्ष 1975 में सुमन कल्याणपुर को सर्वश्रेष्ठ गायिका के फ़िल्म फेयर पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया।[25] इस वर्ष एस.एन. त्रिपाठी की संगीतबद्ध श्री राम हनुमान युद्ध कमल बारोट की अंतिम फिल्म रही। ये एक मात्र चित्रपट जिसमें उन्होंने सात समूह गीत आशा कपूर, महेन्दे कपूर, मन्नाडे और चंद्राणी मुखर्जी के साथ मिलकर गाएं थे।

वर्ष 1976 में रविंद्र जैन की संगीतबद्ध फ़िल्म चितचोर में लोकप्रिय गीतों की रचना की। जिसके दो गीत 'जब दीप जले आना'(हेमलता,येसूदास) और 'तू जो मेरे सुर में'(हेमलता) बहुत ज्यादा मशहूर हुए। इस गीत के लिए हेमलता को सर्वश्रेष्ठ गायिका का पुरस्कार भी मिला। हेमलता ने ज्यादातर गीत रविंद्र जैन के निर्देशन में ही गाए। संगीतकार आर.डी.बर्मन के संगीत से सजी वर्ष 1977 की फिल्म हम किसी से कम नहीं के गीतों ने बहुत धूम मचाई जिसमें प्रमुख गायिका सुषमा श्रेष्ठ का गीत 'क्या हुआ तेरा वादा' जो एक उदासी भरा गीत था जिसे उन्होंन बड़ी ही खूबसूरती के साथ गाया। इस गीत के लिए सर्वश्रेष्ठ गायिका को फ़िल्मफेयर पुरस्कार के लिए नामाकित भी किया गया था।

आज तक संगीत पे्रमी इस गीत को नहीं भुला पाएं हैं। रविंद्र जैन ने अँखियों के झरोखों से और दुल्हन वही जो पिया मन भाये में सुमधुर संगीत देकर श्रोताओं के दिलों को काफी सुकून पहूंचाया। इन दोनों फ़िल्मों में हेमलता ने प्रमुख गायिका की भूमिका निभाई और अपने गायन से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। चित्रपट अपनापन में दिलराज कौर का अनुराधा पौडवाल के साथ गाया बाल गीत 'मैं डैडी से प्यार करती हूं' भी बच्चों के बीच काफी पसंद किया गया था इसी फिल्म में सुलक्षणा पंडित का स्वयं पर फ़िल्माया गया रूमानी युगल गीत 'सोमवार को हम मिले' भी काफी लोकप्रिय हुआ था।[26] इस वर्ष इनकार फ़िल्म के एक नृत्य गीत 'मंगता है तो आजा रसिया' के लिए उषा मंगेशकर को फिल्मफेयर पुरस्कार के लिए नियुक्त भी किया गया था। वर्ष 1978 की फ़िल्म अँखियों के झरोखों से के शीर्षक गीत के द्वारा गायिका हेमलता को इस वर्ष अपार लोकप्रियता मिली। यह गीत इस वर्ष का सर्वाधिक लोकप्रिय गीत भी साबित हुआ। इस गीत के लिये ये फिल्मफेयर पुरस्कार के लिए भी नियुक्त हुई थी।

आर.डी.बर्मन के निर्देशन में शालीमार का 'वन टू चा चा चा', गीत तो इतना ज्यादा पसंद किया गया था कि इस गीत के लिए उषा उत्थुप जी को फिल्मफेयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उषा ने आर.डी.बर्मन और बप्पी लहरी के साथ बहुत काम किया। संगीत निर्देशक बप्पी लहरी साहब को उषा की आवाज़ बहुत शानदार लगती थी। इसीलिए वे ज्यादातर डिस्को वाले गाने उषा को ही देते थे। इनकी आवाज़ डिस्को, पाप और पाश्चात्य गीतों पर ही सही बैठती थी। आशा भोसले को इस वर्ष डान में गाए गीत 'ये मेरा दिल प्यार का दिवाना' के लिए फ़िल्मफेयर पुरस्कार दिया गया।[27] इस वर्ष तक गायिकाओं में सुलक्षणा पंडित, दिलराज कौर, उषा उत्थुप, हेमलता, सुषमा श्रेष्ठ तथा वाणी जयराम अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर चुकी थी। संगीत-प्रेमियों ने इनके गीतों को काफी पसंद भी किया था।

अगले वर्ष 1979 में पं.रविशंकर के संगीत से सजी धार्मिक प्रधान फ़िल्म मीरा आई जिसमें वाणी जयराम ने प्रमुख गायिका की भूमिका निभाई और 12 गीतों को अपनी सुरीली आवाज़ से सज़ाया और अपार लोकप्रियता हासिल की। इस चित्रपट में गाए एक गीत 'मेरे तो गिरधर गोपाल' के लिए उन्हें अगले वर्ष सर्वश्रेष्ठ गायिका का पुरस्कार भी दिया गया।[28] इस वर्ष संगीतकार-गायिका उषा खन्ना की संगीत निर्देशित फ़िल्म दादा और साजन बिना सुहागन बेहतरीन संगीत वाली फ़िल्में साबित हुई। जिसमें दादा के 'हम सबको नेक राह चलाना मेरे अल्लाह'(सुमन कल्याणपुर) जो एक प्रेरणादायक गीत था और एक दिलराज कौर का अन्य साथियों द्वारा गाया एक नृत्य गीत 'गड्डी जांदी ए छलांगा मारदी' बहुत लोकप्रिय हुए थे।

इसके अलावा चित्रपट दीदी (1979) का एक बहुत ही मशहूर युगल गीत 'तुम मुझे भुल भी जाओ' सुधा मलहोत्रा ने गाया और संगीतबद्ध भी किया। यह गीत उन्होंने गायक मुकेश के साथ मिलकर गाया। अपने जमाने में यह काफी लोकप्रिय भी हुआ था।[29] साजन बिना सुहागन जिसमें सुमन कल्याणपुर द्वारा गाया एक धार्मिक गीत 'सता सता के खुश होते हो ओम हरि ओम' तथा दिलराज कौर एवं अन्य साथियों द्वारा गाया एक छेड़-छाड़ एवं मस्ती भरा गीत 'जीजाजी जीजाजी होने वाले जीजाजी' बहुत ही कर्णप्रिय गीत रहे।[30] इन गीतों को सुनकर स्पष्ट आभास हो जाता है कि कितनी मेहनत और लगन से इसका संगीत तैयार किया होगा। इन चित्रपटों का हर गीत लाज़वाब था।

इस प्रकार उपरोक्त गीतों के माध्यम से ये अनुमान लगाया जा सकता है कि उस समय का संगीत बहुत गंभीर, मधुर और सुखदायक था यह भारतीय चित्रपटों का अमर संगीत है जिसने श्रोताओं के दिलों पर गहरी छाप छोड़ी हैं। हिंदी फिल्म संगीत, संगीतकारों की सोच और कड़ी मेहनत का परिणाम है। जिन्होंने फ़िल्मों की कहानी के अनुरूप मधुर और सदाबहार धुनों की रचना की और अपनी बुद्धि और विवेक से इन गीतों के लिए उपयुक्त गायिकाओं का चयन कर चित्रपट जगत में गीत-संगीत को ऊँचाइयों तक पहqaचाया। संगीतकारों ने इन मधुर धुनों के लिए विभिन्न गायन शैलियों, वाद्यों और ध्वनियों का उपयोग किया जिसमें उक्त प्रमुख गायिकाओं ने अपनी मधुर आवाज़ में गाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया जैसा कि हम जानते हैं, शुरुआती फ़िल्मों में शास्त्रीय संगीत और उप-शास्त्रीय संगीत का अधिक उपयोग किया जाता था। शास्त्रीय गायन पर आधारित गीतों के अलावा, देश के विभिन्न हिस्सों से लोकधुनों का भी उपयोग किया गया, लेकिन समय बीतने के साथ भारतीय गायन विधाओं के अलावा, पश्चिमी संगीत भी फ़िल्मी गीतों के लिए इस्तेमाल किया गया। यदि हम वर्तमान फिल्म संगीत को देखते हैं, तो यह शुरुआती दिनों की तुलना में अधिक विविधता लिए हुए हैं लेकिन 1950 से 1970 तक का समय ऐसा रहा है जिसमें पाश्र्व गायिकाओं ने जो गीत गाए उनसे समाज में आध्यात्मिक जागृति तो पैदा हुई ही है साथ ही देश के प्रति प्रेम और समर्पण की भावना भी जागृत हुई है।

चित्रपट 'कशमीर' का 'उठ ए वतन के नौज़वानों' (गीतादत्त), 'बाज़' का गीत 'ऐ वतन के नौज़वान जाग', (गीतादत्त), 'फरियाद' का 'भारत के नौज़वानों भारत के काम आओ' (मुबारक बेगम, सुमन कल्याणपुर), 'दुनियां' का एक गीत' ये धरती हिंदुस्तान की' (आशा भोसले), 'ये गुलिस्तां हमारा'(1972) का 'सारे जहाँ से अच्छा'(सुषमा श्रेष्ठ), 'ये देश हमारा है' का 'हम बच्चे हिंदुस्तान के'(दिलराज कौर एवं साथी-संगीतकार-ज़मीर बीकानेरी), 'लड़की' (1953) का 'मेरे वतन से अच्छा कोई वतन नहीं हैं'(लता मंगेशकर), आज भी इन देशभक्ति गीतों को जोश और उत्साह के साथ सुना जाता है। पारिवारिक गीतों से लोगों में स्नेह उत्पन्न हुआ, मेहनत से संबंधित गीतों से 'मेरे मुन्ने रे सीधी राह पर चलना'(सच्चे मोती/गीतादत्त/एन.दत्ता), 'काम करो आवो अपना जीवन बदल लें'(जीत/सुरैया,गीतादत्त), 'कांटे बनेगीं कलियां, कांटो से न डरना'(हमारी मंजिल/गीता,रफी/हुस्नलाल-भगतराम), 'तख्त न होगा ताज़ न होगा'(आज और कल/गीतादत्त, मन्नाडे/रवि), 'कस के कमर हो जाओ तैयार'(संग्राम/शमशाद, लता/सी.रामचंद्र) आदि से काम करने की प्रेरणा उत्पन्न हुई, किसी त्योहार या उल्लास से संबंधित गीतों जैसे- 'होली आई होली मस्तानों की टोली'(शड़यंत्र-हेमलता-रविंद्र जैन),'भईया मेरे राखी के बंधन को निभाना'(छोटी बहन-लता-जयकिशन), 'मेरे भईया

मेरे चंदा मेरे अनमोल रत्न'(काजल-आशा भोसले-रवि), 'बहना ने भाई की कलाई से प्यार बांधा हैं' (रेशम की डोरी-सुमन कल्याणपुर-शंकर जयकिशन), से आपसी प्रेम की भावना उत्पन्न हुई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उस समय के संगीतकारों ने जो मर्मस्पर्शी धुनें तैयार की और जिस ढंग से इन पाश्र्व गायक कलाकारों ने मस्ती व जोश से गाया आज भी उससे जनता के मन में समर्पण एवं जागृति की भावना उत्पन्न होती है तथा होती रहेगी। समय-समय पर इन प्रमुख गायिकाओं को उनके सर्वश्रेष्ठ गायन के लिए सम्मानित भी किया गया। ये सभी गायक कलाकार चित्रपट संगीत की महान परंपरा का एक अहम् हिस्सा है यद्यपि इस परम्परा के कुछ महान् कलाकारों को हम खो चुके हैं परंतु फिर भी वे संगीत प्रेमी हमसे दूर नहीं गए क्योंकि उनके गीतों में उनकी आत्मा आज भी बसी है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से जो बातें उजागर होती हैं उसके आधार पर कहा जा सकता हैं कि चित्रपट संगीत में शास्त्रीय, उपशास्त्रीय विधाएं ठुमरी, दादरा और होरी का सफ़र बहुत लंबा और सजीला था। जिसमें प्रमुख गायिकाओं का योगदान बड़ा ही सराहनीय रहा। उक्त विभूतियों के गीत तब तक सुने जाते रहेंगे। जब तक सहृदय इंसान और सच्चे प्रेमी इस धरती पर रहेंगे। आज भी इनके गीत हमारे दिलों की धड़कन बनकर ऐसी सहृदयता का संचार करते हैं। 50 से 70 के दशक की पाश्र्व गायक-गायिकाओं के गाए हुए गीतों के लिये इनके नाम पर नाइट रखी जाती हैं। जैसे-लता नाइट, आशा नाइट, सुमन नाइट, रफ़ी तथा मुकेश आदि। इन नाइटस में आज के युवाओं को अपनी कला को दिखाने का अवसर मिलता हैं। इनके गीतों को गाने से लोगों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ हैं। इन पाश्र्व गायकों की नकल करने की आजकल के युवाओं में होड़ सी लगी हुई है। आज भी जब हम दूरदर्शन तथा आकाशवाणी में संगीत संबंधी कार्यक्रम देखते हैं तो इनमें से अधिकांश कार्यक्रम चित्रपट पर आधारित होते हैं तथा आज का युवा वर्ग चित्रपट के स्वर्ण युगीन दौर के गीत गाकर अपने आप को धन्य समझता हैं।

संदर्भ

1. अनिल भार्गव, हिंदी फ़िल्म संगीत 75 वर्षो का सफ़र(1931-2005): वाड्.मय प्रकाशन, लाल कोठी योजना, जयपुर, प्र.सं. 2006 (पृ. 61)
2. आलेख, स्वामी वाहिद काज़मी, 'करोड़ो दिलों की धड़कन उस एक सुरीली आवाज़ का अपनापन', डाॅ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत पत्रिका, मई, 2000, अंक 5, (पृ. 42)
3. चंद्रकांत मोहनलाल, खनकती आवाज़: शमशाद बेगम,: चंद्रकांत प्रकाशन, मुंबई, प्र.सं. जुलाई, 2008(पृ. 11)
4. आलेख, रतन, 'गीतादत्त: सुन्दर सपना यूं बीत गया', हिन्दुस्तान, 21 जुलाई, 1996
5. अजय देशपांडे, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और हिंदी सिनेमा का सुनहरा ताना बाना - कालखंड 1920-60: सई देशपांडे, गांधी नगर, नागपुर, प्र.सं. 10 फरवरी, 2019 (पृ. 212)
6. आलेख, स्वामी वाहिद काज़मी, 'करोड़ो दिलों की धड़कन उस एक सुरीली आवाज़ का अपनापन', डाॅ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत पत्रिका, मई, 2000, अंक 5, (पृ. 72)
7. पंकज राग, धुनों की यात्रा: राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2010, (पृ. 383)
8. नई दुनिया, सरगम का सफ़र, जून, 1989
9. https://youtu.be/ZKCl65gcEdg 'Usha Mangeshkar Biography'27.09.202
10. पंकज राग, धुनों की यात्रा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2010, (पृ. 387)
11. यतीन्द्र मिश्र, लता सुर-गाथा: वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016 (पृ. 95)
12. पंकज राग, धुनों की यात्रा:राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2010(पृ. 468)
13. अनिल भार्गव, स्वरों की यात्रा, (हिंदी फ़िल्म गायकी का सफ़र) 1931-2010: वाड्.मय प्रकाशन, जयपुर, प्र.सं. 2014 (पृ. 200)

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

14. फिल्मी शास्त्रीय गीत अंक, भाग-1(पृ. 29)
15. राजू भारतन, लता मंगेशकर एक जीवनी:लोकगीत प्रकाशन चंडीगढ़, सं. 2015 (पृ.171)
16. सुशील कुमार लोहाट, चित्रपट संगीत के बहुआयामी संगीतकार मदन मोहन: कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2014 (पृ. 27)
17. यतीन्द्र मिश्र, लता सुर - गाथा, न्चबपज (पृ. 341)
18. दैनिक भास्कर, 'नवरंग', वीरवार, 7 अगस्त, 2003
19. https://youtu.be/JO4eTJk_z1k ''UJALE UNKI YADON KE SULAKSHANA PANDIT'', 23-09-2020
20. अनिल भार्गव, हिंदी फ़िल्म संगीत (75 वर्षो का सफ़र), न्चबपज (पृ.130)
21. रंजना नायक, 'सुमन फिर सरगम के सुहाने सफ़र पर' हिन्दुस्तान '25 सितम्बर, 1995
22. आलेख,'इकबाल खां', 'बोले रे पपीहरा', राजस्थान पत्रिका, जयपुर
23. आलेख, गणेश अनंतरामन, 'याद करोगे,याद करोगे...', मेट्रोपोलीस न्यूज़पेपर, 17-18 जुलाई, 1993
24. चंद्रकांत मोहनलाल, खनकती आवाज़: शमशाद बेगम, न्चबपजए (पृ. 12)
25. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Filmfare_Award_for_Best_Female_Playback_Singer
26.https://www.google.com/url?sa=i&url=http%3A%2F%2Fwww.dilrajkaur.com%2Fnews.html&psig=AOvVaw05RvypIi4at29Ttha6wpoH&ust=1689875761543000&source=images&cd=vfe&opi=89978449&ved=2ahUKEwjFro_1q5uAAxXalmMGHXTLAJMQr4kDegUIARCFA
27 https://en.m.wikipedia.org/wiki/Filmfare_Award_for_Best_Female_Playback_Singer
28 https://en.wikipedia.org/wiki/Meera_(1979_film) Date : 10.07.2023
29 आलेख, सिराज खान, 'अतीत के नोट्स', दा ट्रिब्यून-स्पेक्ट्रम, रविवार, 12 अक्टूबर , 2008
30.https://www.google.com/url?sa=i&url=http%3A%2F%2Fwww.dilrajkaur.com%2Fnews.html&psig=AOvVaw05RvypIi4at29Ttha6wpoH&ust=1689875761543000&source=images&cd=vfe&opi=89978449&ved=2ahUKEwjFro_1q5uAAxXalmMGHXTLAJMQr4kDegUIARCFAQ